ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 137-139
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

21वीं सदी में नारी विमर्श

डॉ0 अखिलेश कुमार सरोज
असि0 प्रोफेसर– समाजशास्त्र, डॉ0 राजेश्वर सेवाश्रम महाविद्यालय डिंढुई, प्रतापगढ (उ0प्र0), भारत

Received-25.08.2023, Revised-01.09.2023, Accepted-05.09.2023 E-mail: akileshsaroj.mspg@gmail.com

सारांश:* 21वीं सदी में नारियों की स्थिति में बहुत सुधार आया है। भारत में नारियों की स्थिति अब वैसी नहीं रही, जैसी बीसवीं सदी में के प्रारंभ में हुआ करती थी। बीसवीं सदी के अंत तक आते–आते नारियों की शिक्षा में तथा उनके जीवन स्तर में बहुत परिवर्तन हुए। विभिन्न चुनौतियों और समस्याओं का सामना करती हुई, भारतीय नारी तेज गति से आगे बढ़ने लगी। 21 वीं सदी के प्रारंभ से ही नारी के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव आना शुरू हो गया था। आज भारतीय नारी समाज में एक नए रूप में उभर कर सामने आई है। 21वीं सदी की नारी समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपना बहुमूल्य योगदान दे रही है। भारत में आज नारी की एक ऐसी छाप है, जिसने समाज के विभिन्न पहलुओं पर अपनी कार्यकुशलता तथा कार्यक्षमता से गहरा प्रभाव डाला है। आज स्त्री की सामाजिक स्थिति में काफी सुधार हुआ है, जिसका प्रभाव स्पष्ट रूप से नारियों के जीवन स्तर में आए सकारात्मक परिवर्तन के रूप में देखा जा सकता है। अब भारतीय नारी चारदीवारी तक सीमित नहीं रही बल्कि चारदीवारी के संकुचित दायरे से बाहर निकलकर देश और विदेश में अपनी प्रतिभा का अद्भुत प्रदर्शन कर रही है। इसलिए नारी के प्रति आज सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव आया है।

कुंजीभूत शब्द– सामाजिक दृष्टिकोण, बहुमूल्य योगदान,कार्यकुशलता, कार्यक्षमता, जीवन स्तर, सकारात्मक परिवर्तन, चारदीवारी।

आज पूर्णतया नारी के सम्बन्ध में यह नहीं कहा जा सकता है कि समाज में स्त्रियां पुरुषों द्वारा शोषण का शिकार हो रही है। क्योंकि समाज में स्त्रियों को भी अब समान दृष्टि के साथ समान अवसर प्रदान किए जा रहे हैं। 21वीं सदी की नारी समाज के विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। इसलिए राष्ट्र के निर्माण में नारियों के बहुमूल्य योगदान को अब नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। पुरुष प्रधान समाज तथा पितृसत्तात्मक सोच का अब धीरे–धीरे अंत होता दृष्टिगोचर हो रहा है। यह समाज और राष्ट्र के विकास के लिए अच्छे संकेत हैं, क्योंकि कोई भी राष्ट्र समग्र रूप से तभी विकसित हो सकता है जब उसके सभी नागरिकों को समान अवसर तथा समान अधिकार प्रदान किए जाएं। इसीलिए राष्ट्र की उन्नति, समृद्धि तथा खुशहाली के लिए केवल पुरुषों के योगदान को ही महत्वपूर्ण नहीं माना जा सकता।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अगर देखें तो वैश्विक प्रतिस्पर्धा भरे दौर में पुरुषों के साथ–साथ महिलाओं के योगदान की भी आवश्यकता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए नारी सशक्तिकरण हेतु केंद्रीय तथा राज्य स्तर पर विभिन्न सार्थक कदम उठाए जा रहे हैं। इसी के परिणाम स्वरूप आज भारतीय नारी समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपना बहुमूल्य योगदान दे रही है, फिर चाहे वह साहित्य का क्षेत्र हो, समाज सेवा का क्षेत्र हो, शिक्षा का क्षेत्र हो या फिर राजनीति का क्षेत्र हो धरती से लेकर अंतरिक्ष तक समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कोई भी क्षेत्र नारियों के योगदान से आज अछूता नहीं रहा है।

21वीं सदी की नारी सशक्त नारी है। वह पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली तथा राष्ट्र के निर्माण में पुरुषों के समान बहुमूल्य योगदान देने वाली नारी है।

आज भारतीय नारी राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। आधुनिक होती हुई भारतीय नारी अब समाज के किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। घरेलू हिंसा, शोषण, अत्याचार, बलात्कार तथा यौन उत्पीड़न आदि विभिन्न समस्याओं से मजबूती के साथ लड़ती हुई भारतीय नारी आज निरंतर आगे बढ़ रही है। इन सभी समस्याओं से लड़ने के लिए आधुनिक नारी को अब किसी की आवश्यकता नहीं है। वह समस्त चुनौतियों का सामना करने में अब स्वयं सक्षम है।

विभिन्न समस्याओं को अपनी लेखनी के माध्यम से व्यक्त करने वाली लेखिकाओं ने नारी की समस्याओं पर बेहतरीन ढंग से प्रकाश डाला है। इन लेखिकाओं ने नारी की दयनीय स्थिति पर केवल प्रकाशित ही नहीं डाला, बल्कि उन तमाम समस्याओं से बाहर निकलने के लिए नारी को प्रेरित भी किया। इन लेखिकाओं ने अपनी लेखनी के माध्यम से अपने मनोभावों को व्यक्त करते हुए नारी को उसकी वास्तविक शक्ति का एहसास भी करवाया जिसके परिणाम स्वरूप नारी सशक्त एवम स्वाबलंबी बनकर तमाम सामाजिक चुनौतियों का मजबूती के साथ सामना करने लगी। आज भारतीय नारी समाज के विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों के वर्चस्व को चुनौती दे रही हैं। भारतीय नारी ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी शक्ति, सामर्थ्य तथा योग्यता का लोहा मनवाया है।

बीसवीं शताब्दी में स्त्री विमर्श ने जोर पकड़ा और उसका प्रभाव 21वीं शताब्दी में यॉनि वर्तमान समय में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात महिला सशक्तिकरण पर संवैधानिक रूप से बल दिया गया। समाज में नारी पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर समान रूप से सम्मान के साथ चले ऐसे प्रावधान किए गए जिससे भारतीय नारी तेजी से स्वाबलंबन की राह पर आगे बढ़ी। आज भारतीय नारी समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। आज नारी की प्रतिभा, कार्यक्षमता, कार्यकुशलता, साहस तथा वीरता किसी से छुपी नहीं है। वह पुरुषों के समान हर क्षेत्र में अपनी बहुमूल्य सेवाएं दे रही है। नारी का कार्यक्षेत्र अब सीमित नहीं रह गया है वह राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक तथा वैज्ञानिक हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रही है। भारतीय नारी यह सब कुछ करने में स्वतंत्रता से पूर्व भी सक्षम थी और आज लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी अपने सामर्थ्य का परिचय भली–भांति दे रही है।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

स्त्री विमर्श की समर्थ पैरोकार मन्नू भंडारी की कहानियों में परंपरा से जूझती आधुनिक नारी का चित्रण मिलता है। इनके यहां भारतीय परिवार के आधुनिक सांचे में फिट होने के लिए स्त्री जद्दोजहद कर रही है, क्योंकि इनके यहां आधुनिकता सिर्फ पुरुषों के लिए है। स्त्रियां उस आधुनिकता के सुख भोग को भोग नहीं सकती। वजह साफ है कि उसके पैरों में पहले से ही परंपरा की की जंजीरें अभी भी जस की तस बनी हुई है। मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, त्रिशंकु आदि ऐसी कई कहानियां हैं जिनमें नारी पारिवारिक शोषण और आर्थिक अभावों से जूझते हुए जीवन रूपी गाड़ी को खींच रही है। दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में अधिकतर पारिवारिक समस्याओं को मुखरता से उठाया गया है।

आधुनिक समय में बदलाव की जो बयार चल रही है उसमें एक और स्त्री घुट रही है, तो दूसरी और वह किसी ऐसे नियम को मारने के लिए तैयार ही नहीं है जो पुरुषों के द्वारा उस पर बलात थोपे गए हैं। वह सक्षम और समर्थ हैं अपने जीवन का निर्णय लेने में। उसे किसी के आगे जी हजूरी करने की आवश्यकता नहीं है। चंदा की ज्योत, क्षितिज, तपिश आदि कहानी संग्रह में स्त्री के मनोस्थिति को देखा और पढ़ा जा सकता है। युवती और देह की सीता कहानी की नायिकाएं सामाजिक जकड़न से मुक्त ही नहीं बल्कि आधुनिक परिवेश में विचरण करने वाली नायिका के रूप में चित्रित की गई है।

उषा प्रियंवदा की कहानियों में वैचारिक द्वंद्व और पुरानी तथा नई पीढ़ी का संघर्ष दिखाई देता है। वापसी कहानी में जहां परंपरागत मूल्यों की टकराहट है। उनकी कई कहानियों में प्रेम के बदलते स्वरूप का चित्रण मिलता है। उनकी कहानी में प्रेम के मिलन में शरीर को महत्वपूर्ण माना गया है। कच्चें धागें की नायिका कुंतल पारिवारिक अर्थाभाव से जूझती हुई विवाह नहीं कर पाती।

कृष्णा सोबती की कहानियों में ग्रामीण और नगर सभ्यता की नारी का चित्रण मिलता है। बादलों के घेरे तीन पहाड़ यारों के यार जैसी कहानियों में नायिका मानो सत्य की तलाश कर रही है, किंतु यह सत्य इतना आसान भी नहीं है कृष्णा सोबती समाज के लोगों से गहरे रूप से जुड़ी हुई है। इसलिए सामाजिक ताना–बाना उनकी कहानियों में सायास दिखाई पड़ता है। पंजाब की मिट्टी की सोंधी गंध उनके कहानी पात्रों में पूरे परिवेश के साथ उभर कर सामने आती है।

आधुनिकीकरण के दौर में महिला सशक्तिकरण तेजी से आगे बढ़ा। भारत का बुद्धिजीवी वर्ग सदैव महिला सशक्तिकरण का पक्षधर रहा महिलाओं को संवैधानिक प्रावधानों के माध्यम से मजबूती प्रदान की गई। आज महिला पुरुषों से किसी भी क्षेत्र में कम नहीं है वह अपनी सार्थकता तथा उपयोगिता को अपनी कार्यक्षमता तथा कार्यशैली से निरंतर प्रदर्शित करती रहती है।

भारत में अंग्रेजों के आगमन से जहां भारतीय संस्कृति को चोट पहुंचाने के प्रयास हुए वहीं आधुनिक विचारधारा के साथ–साथ भारतीय जनमानस में पाश्चात्य संस्कृति के बीज बोने के कुत्सित प्रयास भी किए गए। सामाजिक विकास, आर्थिक विकास तथा राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए जो आवश्यक तथा अनिवार्य पहलू है, उसका स्वागत किया जाना अत्यंत आवश्यक है। किसी भी राष्ट्र के चहुंमुखी विकास के लिए उसकी समृद्धि खुशहाली के लिए समाज के सभी नागरिकों का योगदान अपेक्षित होता है। केवल पुरुषवादी सोच या पितृसत्तात्मक विचारधारा से कोई भी राष्ट्र उन्नति के पथ पर तेजी से अग्रसर नहीं हो सकता। किसी भी राष्ट्र के समस्त नागरिक चाहे वह किसी भी जाति, धर्म, संप्रदाय भाषा भाषी, रंग, लिंग आदि से संबंध रखते हो, के संगठित योगदान से ही राष्ट्र को समृद्ध और खुशहाल बनाया जा सकता है। इसीलिए स्त्री पुरुष की संकुचित विचारधारा से बाहर निकलकर यदि दोनों अपनी योग्यता एवं सार्मथ्य अनुसार समान रूप से तथा सद्भाव के साथ राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देते हैं तो तभी एक समृद्ध व खुशहाल तथा शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण संभव हो सकता है। राष्ट्र निर्माण में स्त्री–पुरुष दोनों के महत्वपूर्ण योगदान को समान रूप से देखा जाना चाहिए।

भारतीय धर्म और दर्शन सदैव नारियों के योगदान को समाज में उचित स्थान देने का पक्षधर रहा है। भारतीय समाज में फैली किंचित कुरीतियों तथा सामाजिक बुराइयों को अगर छोड़ दिया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि भारतीय विराट चिंतन में नारियों का स्थान सदैव उच्च रहा है। वर्तमान आधुनिकीकरण के दौर में आधुनिक भारतीय नारी की सोच और चिंतन में काफी बदलाव आया है और वह पहले की अपेक्षा आज अधिक स्वतंत्रतापूर्वक स्वावलंबन की राह पर आगे बढ़ रही है। नारी का आधुनिक होना प्रशंसनीय है वह पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़े और राष्ट्र के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें। भारतीयता के संदर्भ में यह सराहनीय तथा स्वागत योग्य है।

समाज के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की सहभागिता तथा उनकी सूझबूझ से निश्चित रूप से हम सब मिलकर एक बेहतर कल का निर्माण करने में सफल हो सकते हैं। यदि आधुनिकता की आड़ में भारतीय नारी पाश्चात्य संस्कृति की ओर बढ़ेगी और भारत की समृद्ध संस्कृति को त्याग कर पाश्चात्य संस्कृति को धारण करने में समय बरबाद करेगी, तो भारतीयता के आईने में एक नया चित्र उभर कर सामने आएगा जिसके अत्यंत गंभीर परिणाम निकलेंगे। भारतीय नारी का शक्ति का रूप है। वह जग जननी है, वंदनीय तथा पूजनीय है। नारी के संबंध में हमारे धर्म ग्रंथ में लिखा गया है कि यत्र नारी पूज्यंते रमंते तत्र देवता अर्थात जहां नारी की पूजा होती है उसका सम्मान होता है वहां देवता निवास करते हैं। इस प्रकार ऐसी सकारात्मक और सम्मान भरी सोच रखने वाला भारतीय चिंतन नारी को सदैव सम्मान की दृष्टि से देखता रहा है। यदि आधुनिकता की चकाचौंध में नारी पाश्चात्य संस्कृति को अपनाकर अपनी संस्कृति, संस्कार, वास्तविक पहचान और शक्तियों को खो देगी तो उसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। पाश्चात्य संस्कृति बाजारवाद की पक्षधर है जबकि भारतीय संस्कृति परिवारवाद पर बल देती है।

वसुधैव कुटुंबकम जैसा विराट चिंतन और व्यापक विचार किसी अन्य संस्कृति में दृष्टिगोचर नहीं होता। इससे यह अर्थ निकलता है कि बाजारवाद की संस्कृति से प्रभावित होकर अपनी संस्कृति तथा अपनी पहचान खो देना तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि बाजार

में व्यापार होता है और परिवार में प्यार होता है, परस्पर स्नेह सौहार्द और संस्कार होता है। ऐसी समृद्ध संस्कृति को त्याग कर यदि भारतीय नारी पाश्चात्य संस्कृति को अपनाती है तो वह निश्चित रूप से अपना सम्मान संस्कृति और संस्कारों को खो देगी।

अपने उच्च आदर्शों, संस्कारों, मर्यादाओं के साथआगे बढ़ना तथा अपनी वाणी, व्यवहार तथा विवेक से अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने का महत्वपूर्ण कार्य अगर कोई कर सकता है, तो वह नारी है। उसके पास शिक्षा है, संस्कार है, सद्भावना है, तथा सहिष्णुता की अदभुत शक्ति है। जिससे वह भारतीय संस्कृति, धर्म तथा दर्शन के माध्यम से दुनिया को अपनी शक्ति का एहसास कराने में सक्षम है। भारतीय विराट दर्शन तथा भारतीय विराट चिंतन उस महान परंपरा का पोषक तथा पक्षधर है।

आज भारतीय संस्कृति पर जिस तरह से आधुनिकता के नाम पर पाश्चात्य संस्कृति हावी हो रही है वह एक अत्यंत चिंतनीय विषय है। भारत की महान संस्कृति नारी के अश्लील तथा अर्ध नग्न रूप को स्वीकार नहीं कर सकती क्योंकि यह पहचान नहीं है। भारतीय नारी भोग विलास तथा आकर्षण की वस्तु कदापि नहीं हो सकती। वह सभ्य, सुशीला, मधुरभाषी तथा उच्च आदर्शों को आत्मसात करने वाली और पुरुषों का पथ आलोकित करने वाली एक महान शक्ति है। मां, बहन, बेटी तथा भार्या आदि विभिन्न रूपों में नारी के सराहनीय योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। वह उद्दंड तथा पथभ्रष्ट नहीं हो सकती। वह शालीनता से भरी हुई कुशल गृहणी भी है और सृष्टि का संचालन करने वाली साक्षात मां भी है। उसके महान एवं गौरवमयी स्वरूपों का बखान जितना भी किया जाए उतना कम है। उसे अपने वास्तविक स्वरूप और शक्ति को समझकर धर्म विरुद्ध आचरण नहीं करना चाहिए। जब तक वह मर्यादाओं का तथा संस्कारों के साथ आगे बढ़ेगी तब तक उसे कोई भी परास्त नहीं कर सकता। भारतीय नारी में असीमित आंतरिक दिव्य शक्तियां हैं। मगर विडंबना यह है कि वह आज पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकर अपनी पहचान तथा वास्तविक शक्तियों को खोती जा रही है।

कभी कभी भारतीय नारी का जो रूप उभर कर सामने आता है वह दुखद भी है और चिंताजनक भी। भारतीय नारी के इसी रूप का चित्रण करती हुई प्रोफेसर चमन सिंह ठाकुर द्वारा रचित यह कविता आंतरिक पीड़ा और वेदना को व्यक्त करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. लवानिया, बी.एम.एम., भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर 2008.
2. सारस्वत, स्वपनिल, महिला विकास एक परिदृश्य, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली – 2008.
3. योजना, अगस्त– 2017
4. कुरुक्षेत्र, जून, 2017
5. वेदी, किरण, महिला सशक्तिवरण, कुछ विचार योजना, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली।

*****